[digitised by sacw.net]

शासक वर्गों के साम्प्रदायिक आक्रमण को खत्म करो !

श्रीमति गाँधी की हत्या के बाद उत्तरी भारत में सिक्ख सम्प्रदाय के खिलाफ साम्प्रदायिक हत्याकाँड हुआ जिससे कि दिल्ली में ही हज़ारों मौतें, हजारों घायल और करीब 50,000 को रिलीफ कैम्पों में शरण लेने को बाध्य होना पड़ा। सिक्खों के औद्योगिक संस्थानों, दुकानों और घरों को भी भारी मात्रा में नुकसान पहुंचा है। दिल्ली की पुनर्वास कालोनियों जैसे त्रिलोकपुरी, मंगोलपुरी और सुल्तानपुरी में भीषण हत्याकाँड लम्पट तत्वों द्वारा किया गया जबकि बाहरी क्षेत्रों में ग्रामवासी इस हत्याकाँड के साधन बने। मध्यम वर्गीय सिक्खों की फैक्ट्रीयों व दुकानों की लूटपाट व जलाये जाने की घटनायें हुईं जबकि सिक्ख मजदूरों व दस्तकारों की हत्यायें, लूट, बलात्कार व जलाये जाने की घटनायें हुई।

सिक्खों के खिलाफ यह दंगाई आक्रमण कोई लोगों के स्वयं-स्फूर्त गुस्से को नहीं दिखाता बल्कि जैसा कि प्रत्यक्षदर्शियों के अगिनत तथ्यों के अनुसार यह संगठित व योजनाबद्ध था और कांग्रेस(ई) के भीतर "संजय माफिया" के लोगों द्वारा अंजाम दिया गया था। यह भी देखने में आया है कि अन्य साम्प्रदायिक ताकतें (आर०एस०एस०, भारतीय जनता पार्टी) भी दंगे में शामिल थी हालाँकि उनकी भागीदारी थोड़ी-बहुत ही थी। आक्रमणकारी भीड़ को दिल्ली की पुनर्वास बस्तियों व शहर के बाहरी हिस्सों के गांवों में कांग्रेस(ई) के स्थानीय नेताओं द्वारा संगठित किया गया था।

औद्योगिक पूंजीपति व जमीदार, पूंजीवादी व संशोधनवादी पार्टीयों में अपने राजनैतिक प्रतिनिधियों के द्वारा वर्तमान सामाजिक ढ़ाँचे को बनाये रखने के लिए मजदूर वर्ग व मेहनतकश जनता की एकता को तोड़ने के लिए धर्म, सम्प्रदाय, भाषा और जातिय आधारों पर जज्बातों को उभारते हैं। शासक वर्ग विभिन्न राजनीतिक पार्टियों (काँग्रेस (आई), भारतीय जनता पार्टी आदि) और राजनितिक—धार्मिक संगठनों (आर एस एस, जमायते इस्लामी, सिक्ख कट्टरपंथवाद) द्वारा खुलेआम हिन्दू, सिक्ख और मुस्लिम साम्प्रदायिकता का विस्तार कर रहा है। प्रत्येक सम्प्रदाय में निहित साम्प्रदायिक विचारधाराओं के प्रचार व क्रियाकलापों द्वारा साम्प्रदायिकता की आग को भड़कने में सहायक की भूमिका निभाई जाती है। मजदूर वर्ग हिन्दू बहुमत या सिक्ख या मुस्लिम अल्पमत के सभी प्रकार के साम्प्रदायिकतावाद की खिलाफत करता है। वर्तमान में भिवंडी और हैदराबाद के साम्प्रदायिक आक्रमणों में मेहनतकश जनता को हिन्दू-मुस्लिम आधारों पर विभाजित करने की कोशिश की गई। शासक वर्गों द्वारा आसाम में आसामियों व बंगाली मुसलमानों, त्रिपुरा में मूल आदिम जातियों की जनसंख्या व बंगाली बहुमत, के खिलाफ संघर्ष पैदा किया गया।

दिल्ली में हुई साम्प्रदायिकता की जड़ पंजाब में फैलाई गई साम्प्रदायिकता में हैं। पिछले सात सालों में शासक वर्गों द्वारा साम्प्रदायिकता का खूब ताकत लगा कर प्रचार किया गया है। सिर्फ स्थानीय मेहनतकश लोगों (बिहारी, पंजाबी हिन्दू, पंजाबी जाट) को अलग करने के लिए ही नहीं बल्कि पंजाब की विधानसभा में अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी के गठजोड़ को तोड़ने के लिए भी साम्प्रदायिकता का सहारा लिया गया। पंजाब के कांग्रेस (आई) के श्रोतों ने खुद ही यह पोल खोल दी थी कि सिक्ख कट्टरपंथी-आंतकवादियों के समूहों जैसे कि दल खालसा और भिंडरवाले का जत्था और कांग्रेस (आई) के राष्ट्रीय नेतृत्व के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध थे, जब जैलसिंह गृहमंत्री थे। कांग्रेस (आई) ने पंजाब में आपस में संघर्षपूर्ण व एक दूसरे के खिलाफ साम्प्रदायिकता को उत्साहित

[digitised by sacw.net]

किया। एक तरफ सिक्ख कट्टरपंथी-आंतकवादी जब व्यवस्थित ढंग से हिन्दू, सिक्ख और निरंकारी विरोधियों को खत्म कर रहे थे तो इसी के साथ साथ कांग्रेस (आई)—आर एस एस और भारतीय जनता पार्टी से सहयोग कर—ने हिन्दुओं और निरंकारियों को हिन्दू सुरक्षा समिति के द्वारा प्रतिक्रिया के रूप में संगठित किया।

पंजाब में हमारी भारतीय कम्यु० पार्टी और मार्क्सवादी कम्यु० पार्टी की लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के संघर्ष में क्या भूमिका थी ? इनके संसदीय रणनीतिज्ञ पंजाब में साम्प्रदायिकता से संघर्ष करने के बजाय साम्प्रदायिक और कट्टरपंथी ताकतों से सहयोग करने में जुट गये। 1959 से भाकपा व 1964 से माकपा, दोनों ही शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के चुनावों में भाग लेते रहे हैं यह पंजाब व पड़ोसी राज्यों में गुरुद्वारों के प्रबन्ध को देखने वाली एक उच्च संस्था है। इन सुधारवादी और साम्प्रदायिक ताकतों के बीच गठबन्धन 1979 के शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के चुनावों से स्पष्ट है। भाकपा ने काग्रेस (आई) की सहयोगी बनकर कट्टरपंथी दल खालसा, पन्थ दल खालसा, को अपना समर्थन दिया जबकि माकपा ने जनता पार्टी की सहयोगी बनकर अकाली दल का समर्थन किया। माकपा ने हालाँकि कभी-2 अकाली दल की "साम्प्रदायिक समझ" की आलोचना की और अपील की कि वह लोकतांत्रिक रास्ता अपनायें। माकपा अकाली मोर्चे के अन्दर के प्रतिक्रियावादी विचारों की व्यवस्थित ढंग से खिलाफत न करके सिक्ख साम्प्रदायिकता की मक्खनबाजी करता है भाकपा व माकपा की संसदीय रणनीति का तमाम तर्क साम्प्रदायिकतावाद के अनुकूल रहा है।

एक तरफ पंजाब में काग्रेस (आई) ने हिन्दू व सिक्ख साम्प्रदायिकता दोनों को तेजी से फैलाया तो दूसरी ओर पंजाब के बाहर उसने हिन्दू साम्प्रदायिकता का सहारा लेकर सिक्खों को बलि का बकरा बनाया जिससे कि उसका उत्तरी भारत में राजनैतिक जनाधार फैल सके। दिल्ली व देश के अन्य उत्तरी भागों में सिक्खों के इस नरसंहार को इसी एकमात्र राजनीतिक रणनीति के अभिन्न अंग के बतौर समझा जा सकता है यह भी कोई संयोग की बात नहीं है कि आर एस एस के प्रवक्ता देवरस हिन्दू साम्प्रदायिक कांग्रेसी (ई) नीतियों के समर्थन में अपनी आवाज मिला रहे हैं।

तमाम प्रकार की साम्प्रदायिकता के खिलाफ एकमात्र प्रभावशाली ताकत मजदूर वर्ग है। जिसके पास एकता व संगठन की ताकत है व मेहनतकश जनता के साथ जिसकी मित्रता है। तुगलकाबाद के महान रेलवे शैड मजदूरों को जैसे ही पता लगा कि आक्रमणकारी भीड़ ट्रेनों को रोककर सिक्खों की हत्या कर रही हैं तो उन्होंने खुद ही ट्रेनों को रोका यहाँ तक कि जोर जबरदस्ती से भी सिक्ख यात्रियों को उतारा और उनको एक बारातघर में ले जाकर कई दिनों तक उनको खाना दिया व उनकी हिफाजत की। जहाँ कहीं भी मेहनतकश सुरक्षा समितियाँ या आम लोगों ने आवासीय क्षेत्रों में सभी सम्प्रदायों के साथ मिलकर एकता कायम की, वहाँ लम्पट तत्वों की एक नहीं चली। यह हमें शासक वर्गों द्वारा भविष्य में होने वाले साम्प्रदायिक आक्रमण के लिए भी सबक सिखाता है। अभी मजदूर वर्ग के संगठनों को अपना ध्यान दंगा पीड़ितों के लिए सहायता कार्य और पुर्नवास के काम में लगाना चाहिये। प्रत्येक फैक्ट्री के मजदूरों और ट्रेड यूनियनों द्वारा दवाईयां, धन, कपड़े, भोजन व आवासीय पुर्ननिर्माण के कार्यों में सहायता की जानी चाहिये। सरकार द्वारा रिलिफ कैम्प समेटे जा रहे हैं, चुनावी तैयारी के कारण जबकि अन्य कोई प्रबन्ध या सुरक्षा भी नहीं की जा रही है। इसी के साथ-साथ मजदूर वर्ग के प्रत्येक हिस्से को साम्प्रदायिकता के जहर के खिलाफ प्रचार करना चाहिये और अपनी पांतों में से इस जहर को निकाल बाहर फैंके।

क्रांतिकारी कामगार समिति

24.11.84
दिल्ली

मलिक प्रेस, 1-बी, गोपाल नगर, दिल्ली-110033